प्राक्कथन

"Tell me the position of woman in the country and I will tell you what type of the country it is !!!"

- Gandhiji

भारतीय सामाजिक व्यवस्था विश्व सभ्यता की एक अनुपम एवं उत्कृष्ट निधि है । इस निधि को अनादिकाल से अक्षुण्य बनाये रखने मे हिन्दू संस्कृति और सभ्यता ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है । हिन्दू शास्त्रकारों की मान्यता रही है कि जिस घर में स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ पर देवताओं का निवास होता है । वास्तव में उनकी यह धारणा ही हिन्दू समाज व संस्कृति को सम्पूर्णता प्रदान करने मे महत्वपूर्ण रही है ।

विश्व मे २० वीं सदी के छठ्ठे दसक के उत्तरार्ध में अमेरिका में स्त्रियों के अध्ययन की नींव डाली गई । १९७५ के आंतरराष्ट्रीय नारी वर्ष के बाद "स्त्रियों का अध्ययन" को एक अध्ययन विषय के रुप में उपयोग होने लगा । और उसके बाद से ही स्त्रियों के अध्ययन अर्थात् (नारी अध्ययनों) का विषय के रुप में विकास हुआ है ।

हम विश्व की कुल वस्ती का ५०% प्रतिशत कही जाने वाली स्त्रियों की बस्ती को समाज विज्ञानो द्वारा किए जाने वाले अलग-अलग पहलूओं को नकार नही सकते । क्योंकि समाज मे स्त्री का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है । समाज मे स्त्री की भूमिका स्त्री को अनेकविध स्थान प्रदान करती है । और इस स्थान का प्रभाव समाज के विकास पर होता है ।

स्त्री विकास के लिए स्त्रियों का स्थान और सत्ता महत्त्वपूर्ण है । किसी भी समाज में स्त्रियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का स्तर उनके स्थान का माप दर्शाता है । प्रत्येक व्यक्ति का स्थान उसकी भूमिका से प्रगट होता है । स्त्रियों का स्थान और भूमिका जैसे सामाजिक प्रगृति और विकास निश्चित करते है उसी

प्रकार समाज जिस पर आधारित है, उस संस्कृति और मूल्यों की पहचान कराता है । परिवार मे स्त्री की स्वायत्तता अर्थात स्त्रियों के ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता और उसके निर्णय लेने की उपयोगिता उसके स्थान को सूचित करती है ।

समाज निर्माण में 'नारी' की अहम भूमिका है । सामाजिक कार्य हो या धार्मिक उसमें नारी अग्रणी रहती है, मांगालिक कार्य नारी के द्वारा ही सम्पन्न होते है । इसलिए नारी को मंगला भी कहा जाता है । नारी समाज की रीढ़ है । जिस प्रकार सिक्के के दो पहलु होते हैं वैसे ही पारिवारिक जीवन के दो पहलु है नर और नारी ।

सभी राज्यों में स्त्रियों का स्थान समान नहीं है, कई राज्यों में इसमें भिन्नता देखने मिलती है । जिसका कारण किसी भी समुदाय का सामाजिक व सांस्कृतिक ढाँचा हो सकता है, जैसे की गुजरात व गुजरात के पड़ौसी राज्य राजस्थान में स्त्रियों के स्थान में भिन्नता देखी गई है, इतना ही नहीं, बल्कि एक राज्य में जिस जाति की स्त्री का जो स्थान है वह दुसरे राज्य में अलग भी हो सकता है । एक शोधार्थी के रूप में मुझे इन दोनों राज्यों का अच्छा अनुभव है । बर्षो से जिस समुदाय के साथ जुड़े है ऐसे जाट समुदाय की स्त्रियों का अभ्यास उल्लेखनीय है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में "अहमदाबाद में निवास करते जाट समुदाय की स्त्रियों के सामाजिक स्थान" के विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डालने का प्रयास किया गया है । जाट महिलाओं की सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षणिक व आर्थिक स्थिति में आए बदलावों की मीमांसा करने का एक छोटा सा प्रयत्न किया गया है । साथ ही उनसे सम्बन्धित समस्याओं के कारण का समाधान खोजने का प्रयास भी इस शोध-प्रबन्ध में किया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मैंने सात अध्यायों में विभक्त किया है । प्रथम अध्याय में जाट-जाति की उत्पत्ति, 'जाट' शब्द का व्युतपत्तिपरक अर्थ, जाटों का आर्यत्व, जाटों के रीति-रिवाज एवं जाति में जाट स्त्रियों के स्थान को रेखांकित किया है।

द्वितीय अध्याय अभ्यास पद्धतियों से सम्बन्धित है और तृतीय अध्याय में शोध के लिए सहायक साहित्य की समीक्षा की गई है । चतुर्थ अध्याय में अभ्यास घटक तथा उत्तरदाताओं की प्राथमिक जानकारी दी गई है । पंचम अध्याय में जाट समुदाय की स्त्रियों का परिवार में क्या स्थान है ? को रेखांकित किया गया है ।

जाट समाज में जाट स्त्रियों की वैवाहिक स्थिति को षष्ठम अध्याय में प्रस्तुत किया गया है । जाट समाज में जाट स्त्रियों की शैक्षणिक एवं धार्मिक स्थिति का अंकन सप्तम अध्याय में किया गया है । अंत में इस शोध का सारांश प्रस्तुत कर इसका मूल्यांकन शोध की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को अन्तिम अध्याय में प्रस्तुत किया गया है ।

स्थल : अहमदाबाद **शारदा जे. जाखड़**

तारीख :

आभार-प्रदर्शन

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लिए मुझे अनेक लोगों का सहयोग मिला है। इस सोपान पर मैं उनका आभार व्यक्त करना चाहती हूँ ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध निबंध परम् आदरणिया डॉ.चंद्रिकाबहन रावल के सुयोग्य, विद्वतापूर्ण एवं स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन से पूर्ण हो सका है । आपने इस शोध प्रबन्ध को सम्पन्न कराने मे ज्ञानपूर्ण, मौलिक विचारों, प्रज्ञा तथा विद्वतापूर्ण चिन्तन द्वारा मार्गदर्शन दिया । यह शोध-प्रबन्ध उनके प्यार एवं कुशल मार्गदर्शन का सुफल है । आपने अपने व्यस्तमय समय में से मेरे लिए समय निकालकर विषय के स्पष्टीकरण एवं शंकाओं का समाधान कर मेरी हर मुश्किल को आसान बना दिया । सचमुच गुरु तो गोविन्द तुल्य ही है, मैं आपके प्रति यह भाव बनाये रखूँगी ।

गुजरात विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष श्री डॉ. मनुभाई मकवाणा जी की विशेष रुप से आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर शोधकार्य के लिए प्रेरित किया व संबल बनाये रखा । साथ ही विभागीय प्राध्यापको, डॉ. जे.सी.पटेल, डॉ.गौरांग जानी तथा डॉ.लीनाबहन बादशाह की भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया ।

सविशेष आभार मैं मेरे उत्तरदाताओं का मानती हूँ, कि जिन्होंने क्षेत्रिय अभ्यास के लिए अपना किंमती समय देकर मुझे जानकारी उपलब्ध करवाई ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में प्रोत्साहन व सहकार देने के लिए एस.एल.यु. कॉलेज के समाजशास्त्र विभाग की प्राध्यापिका डॉ.शैलजा ध्रुव की दिल से आभारी हूँ । राजकीय महाविद्यालय नवलगढ़ (राजस्थान) के हिन्दी विषय के व्याख्याता डॉ. रामकुमार सिंह का भी सत्परामर्श और सुझाव इस शोध यात्रा को सहज बनाने में सहायक रहा है, साथ ही हिन्दी में प्रूफ रीडींग करने के लिए मैं उनका आभार मानती हूँ ।

मैं पुस्तकालय के सभी गुरुजनों एवं अन्य सहायक कर्मचारियों की भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य को सम्पन्न करवाने के लिए अपना

सहयोग दिया । जिससे सम्बन्धित ग्रन्थों, पुस्तको, प्रतिवेदनो तथा पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन संभव हो सका ।

मैं मेरे माता-पिता श्रीमती लीलावती देवी व श्री जगदेवसिंह जाखड़ तथा सास-ससुर श्रीमती परमेश्वरी देवी व श्री छोटुरामजी थाकन की ऋणी हूँ । जिन्होंने जीवन के प्रत्येक सोपान पर आर्शीवाद, मार्गदर्शन तथा सहानुभूति दी है।

मैं अपने पति डॉ.रमेश थाकन की भी आभारी हूँ जिन्होंने शोध के प्रति मेरा उत्साह बनाये रखा । तथा शोधकार्य में संशोधन के कार्य में जरुरी मार्गदर्शन व सहयोग प्रदान किया ।

मैं मेरे भाई सुरेन्द्रसिंह व रघुवीरसिंह जाखड़ का भी दिल से आभार मानती हूँ । जिनकी प्रेरणा सुस्पष्ट चिंतन एवं श्रमपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा से यह कार्य सम्पन्न हो सका है ।

समयानुकूलता के लिए मैं अपने पुत्र अभयराजसिंह थाकन व भतीजे अंशूल व वीरसिंह जाखड़ का भी प्रेमपूर्वक आभार मानती हूँ ।

इस अभ्यास को सफल बनाने में प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से सहकार देने वाले श्री जोगाराम सहारण, शक्ति भैया साथ ही मेरे परम मित्र श्रीमती जस्मीता प्रजापति, धर्मिष्ठा, पटेल मालती का भी आभार मानती हूँ ।

कम्प्यूटर का विश्लेषण करने के लिए डॉ.नीतिनभाई पटेल का आभार व्यक्त करती हूँ । टाईप सेटींग के लिए मैं भारती बहन लेउवा का आभार मानती हूँ ।

तारीख :

जाखड़ शारदाकुमारी जे.

स्थल :

विषय-सूची

क्रम सं.	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
•	प्राक्कथन	IV
•	आभार-प्रदर्शन	VII
अध्याय-१	विषय-प्रवेश	१-६२
अध्याय-२	अभ्यास पद्धति	६३-१०६
अध्याय-३	साहित्य समीक्षा	१०७-१४३
अध्याय-४	अभ्यास घटक तथा उत्तरदाताओं की प्राथमिक जानकारी	१४४-१८१
अध्याय-५	जाट स्त्रियों का पारिवारिक स्थान	१८२-२१४
अध्याय-६	जाट स्त्रियों का वैवाहिक स्थान	२१५-२५०
अध्याय-७	जाट स्त्रियों का शैक्षणिक व आर्थिक स्थान	२५१-२७७
अध्याय-८	अभ्यास के निष्कर्ष और सुझाव	२७८-२९४
परिशिष्ट-१	मुलाकात अनुसूचि	२९५-३१२
परिशिष्ट-२	संदर्भ सूचि	

सारणी-सूची

सारणी क्रम	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
४.ब.१	उत्तरदाताओं की उम्र	१५२
४.ब.२	उत्तरदाताओं का व्यवसाय	१५३
४.ब.३	उत्तरदाताओं की उपजातियाँ	१५५
४.ब.४	उत्तरदाताओं की शिक्षा	१६०
४.ब.५	उत्तरदाताओं के परिवार की सदस्य संख्या	१६२
४.ब.६	उत्तरदाताओं के परिवार में शिक्षा	१६५
४.ब.७	उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति	१६७
४.ब.८	उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय	१६८
४.ब.९	उत्तरदाताओं के साथ रहने वाले सदस्य	१६९
४.ब.१०	उत्तरदाताओं के परिवार में कमाने वाले सदस्य	१७०
४.ब.११	उत्तरदाताओं के निवासस्थान का ढाँचा	१७१
४.ब.१२	उत्तरदाताओं के परिवार में वैभवी साधन	१७३
४.ब.१३	उत्तरदाताओं का मूल वतन/गाँव	१७४
४.ब.१४	अहमदाबाद में रहने का समय	१७९
५.१	जाट परिवार में जन्म की स्वीकृति	१८६
५.२	जाट परिवार में बालक जन्म पर धार्मिक एवम् सामाजिक विधियाँ	१९१
५.३	परिवार में पुत्र जन्मोत्सव	१९५
५.४	परिवार में पुत्री जन्मोत्सव	१९६

५.५	परिवार में पुत्र-पुत्री का सामाजीकरण	१९९
५.६	परिवार में बच्चे की शिक्षा का माध्यम	२०२
५.७	परिवार में पुत्र को दी जानेवाली शिक्षा	२०४
५.८	परिवार में पुत्री को दी जाने वाली शिक्षा	२०६
५.९	परिवार के निर्णयो में स्थान	२०९
५.१०	परिवार की ख़रीदी में निर्णय	२१०
५.११	परिवार के झगड़ों में निवारणकर्ता	२१२
६.१	विवाह की आयु	२२१
६.२	परिवार मे विवाह की उम्र	२२४
६.३	उत्तरदाताओं के परिवार में शादी की पहल	२२६
६.४	जाट स्त्री में जीवनसाथी की पसंदगी	२२८
६.५	उत्तरदाताओं की राय में अन्तर्जातीय विवाह	२३२
६.६	उत्तरदाताओं की पसंदगी का परिवार	२३३
६.७	उत्तरदाताओं के दाम्पत्य जीवन पर परिवार के वातावरण का प्रभाव	२३५
६.९	परिवार में दहेज-प्रथा	२३९
६.१०	परिवार में शादी के समय स्त्री को मिलनेवाली भेंट	२४०
६.११	पुत्र-पुत्री की शादी की पसंदगी का स्थल	२४२
६.१२	पढ़ने में रूचि	२४४
६.१३	शादी के बाद पढ़ने की छूट	२४६
६.१४	परिवार में नौकरी की इजाजत	२४७

७.१	उत्तरदाताओं को ससुराल में पढ़ाई का सहयोग	२५४
७.३	शिक्षा और परिवर्तन	२५६
७.४	विकास में शिक्षा का योगदान	२५८
७.५	शिक्षा का प्रभाव	२५९
७.६	उत्तरदाताओं की नौकरी में रूचि	२६३
७.७	उत्तरदाताओं की आय पर अधिकार	२६५
७.८	उत्तरादाताओं को माता-पिता से मिलने वाला अधिकार	२६८
७.९	मताधिकार का उपयोग	२७०
७.१०	उत्तरदाताओं की जाट समाज के कार्यक्रमों में हिस्सेदारी	२७२

आलेख-सूची

क्रम	ग्राफ नं.	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
१	४.ब.२	उत्तरदाताओं का व्यवसाय	१५४
२	५.१	जाट स्त्री के परिवार में जन्म की स्वीकृति	१८७
३	५.५	परिवार मे पुत्र-पुत्री का सामाजीकरण	२००
४	५.७	परिवार में पुत्र को दी जाने वाली शिक्षा	२०५
५	५.८	परिवार में पुत्री को दी जाने वाली शिक्षा	२०७
६	६.६	उत्तरदाताओं की पसंदगी का परिवार	२३४
७	६.११	पुत्र-पुत्री की शादी की पसंदगी का स्थल	२४३
८	६.१४	परिवार में नौकरी की इजाजत	२४८
९	७.७	उत्तरदाताओं की आय पर अधिकार	२६६
१०	७.९	मताधिकार का उपयोग	२७१
	•	अहमदाबाद का नकशा	१४९
	•	चित्रांकन	५४-५५
			१९३